

PRESS & MEDIA



CSIR-CENTRAL BUILDING RESEARCH INSTITUTE,
ROORKEE, UTTARAKHAND





Home अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उत्तराखंड

School students of PM Shri Kendriya Vidyalaya Visited CBRI Roorkee



By Sahara Live News

© OCT 27, 2025



CSIR-CBRI, Roorkee Hosts Jigyasa 2.0 Program for Students from PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun Roorkee, October 2025.

CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee successfully organized a Jigyasa 2.0 Program for 120 students and 6 faculty members from PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, aimed at nurturing scientific curiosity and promoting experiential learning among young minds.

The program began with a visit to Dr. Billing's Exhibition Gallery, where students witnessed several live demonstrations of CBRI's cutting-edge technologies — including the Shri Ram Mandir model with the Surya Tilak mechanism, High Draught Zig-Zag Brick Kiln Technology for energy-efficient brick production, and disaster-resilient building systems promoting safe and sustainable construction.

An interactive session held at the RNT Auditorium commenced with a welcome address by Dr. Neeraj Jain, Senior Principal Scientist & Nodal Officer (Jigyasa 2.0), followed by Dr. S.K. Panigrahi, Chief Scientist, who highlighted the importance of developing scientific temperament among students through practical exposure and learning.

Insightful lectures were delivered by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, on "Utilisation of Solar Energy in Houses", emphasizing the role of solar architecture and renewable technologies in sustainable living, and Dr. Hemlata, Senior Scientist, on "Waste Plastic Composites as Building Components", introducing innovative ways of recycling plastic waste into eco-friendly construction materials.

Students also visited the Rural Technology Park, Fire Safety Engineering Laboratory, and Structural Engineering Division (3D Printing Facility), where they experienced firsthand the applications of scientific research in real-life construction and safety scenarios.

The program concluded with an engaging interaction between students and scientists, encouraging them to pursue science and innovation for a sustainable future. The initiative reflected CSIR-CBRI's continuous efforts under the Jigyasa 2.0 initiative to connect laboratory research with classroom learning and inspire the next generation of innovators.

The visit was coordinated with active participation and support from Shri V.K. Nautiyal, Principal and teachers, PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, along with CBRI staff members Rashi, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, who ensured the smooth execution and coordination of the program activities.

*Director CBRI emphasises that JIGYASA is one of the most significant initiatives that the CSIR undertook at the national level during its Platinum Jubilee Celebration Year, as an inspired vision of a new India and Scientific Social Responsibility (SSR) of the Institution. He also wishes bright future for all the student participants.

उन्नत आवासीय समाधानों के लिए शोध नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता

जागरण संवाददाता, रुड़की : विश्व आवास दिवस पर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती एवं सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों एवं नवाचारों को बढ़ावा देना था।

संस्थान में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सीबीआरआई सतत, किफायती और तकनीकी दृष्टि से उन्नत आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस दिशा में शोध, नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जा रही है। मुख्य वैज्ञानिक डा. नीरज जैन ने टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित एईओएन इंटीग्रेटेड बिल्डिंग डिजाइन कंसल्टेंट्स एलएलपी के मैनेजिंग पार्टनर आशीष राखेजा, डा. पीके दास, प्रो. भूपिंदर सिंह, प्रो.



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में विश्व आवास दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी • सागाह-संस्थान

राजशेखर, डा. केएस कुलकर्णी और इंजीनियर अस्वथी ने व्याख्यान के माध्यम से आवासीय विकास में अनुसंधान, नई एवं टिकाऊ तकनीकों, स्मार्ट सिटी अवधारणाओं, पर्यावरण अनुकूल निर्माण और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के उपायों पर जानकारी दी। साथ ही आधुनिक आवासीय निर्माण के नवीनतम रुझानों, चुनौतियों और संचालित समाधानों के बारे में जागरूक किया। इस दौरान आवास पर केंद्रित एक वीडियो प्रदर्शित किया गया। जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय

अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। वहीं पैनल चर्चा में विशेषज्ञों ने शहरी और ग्रामीण आवास, टिकाऊ निर्माण, ऊर्जा कुशल तकनीक, स्मार्ट सिटी और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अपनाए जाने वाले उपायों पर विचार साझा किए। पैनल चर्चा में उपस्थित सभी वक्ताओं ने तकनीकी दृष्टिकोण, प्रशासनिक पहल और नीति निर्माण में सहयोग के महत्व पर जोर दिया कार्यक्रम में प्रमुख विज्ञानी डा. मिवकी दलबेहरा, डा. ताबिश आलम, डा. नवीन निशांत आर्किटेक्ट अनूप, डा. चंदन स्वरूप मीणा, डा. हेमलता आदि उपस्थित रहे।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

टिकाऊ आवास से जीवन की गुणवत्ता सुधारने पर जोर

■ विश्व आवास दिवस पर सीबीआरआई में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

रुड़की, 6 अक्टूबर (अनिल): विश्व आवास दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने इस अवसर की प्रासंगिकता बताते हुए टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण



कार्यक्रम में प्रतिभाग करते अतिथि।

दिया और संस्थान की आवास निर्माण तथा शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की।

डॉ. केएस कुलकर्णी, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. नवीन निशांत द्वारा आवास पर केंद्रित एक विशेष वीडियो प्रदर्शित किया गया, जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की

चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। डॉ. नीरज जैन, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, डॉ. हेमलता, डॉ. ताबिश आलम, इंजीनियर अस्वथी और अन्य शामिल थे। कार्यक्रम का समापन डॉ. नीरज जैन द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

सुरक्षित आवास निर्माण की जानकारी दी

रुड़की, संवाददाता। विश्व आवास दिवस के अवसर पर सोमवार को सीबीआरआई में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने किया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने संस्थान की आवास निर्माण, शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि सीबीआरआई सतत, किफायती दृष्टि से आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है।

Presented in Swatantra Chetna Newspaper



Published in: Swatantra Chetna Newspaper

सीबीआरआई ने मनाया सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस

स्वतंत्र चेतना
रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर अडि्टोरियम में एक भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर, भवन विज्ञान और अनुसंधान में संस्थान के उल्लेखनीय योगदानों को स्मरण किया गया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों, छात्रों और गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पदमश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन, पूर्व कुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एचएम संस्थापक निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गांधीनगर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। अपने भाषण में उन्होंने संस्थान के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं को भी रेखांकित किया। इसके पश्चात् एक वर्ष के अंतराल में सीएसआईआर-सीबीआरआई की सेवा से अतिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए कर्मिकों को मुख्य अतिथि द्वारा सम्मान पत्र, शल और कलाई घड़ी भेंट कर सम्मानित किया गया। साथ ही 25 वर्ष की निरंतर सेवा पूर्ण



कर चुके कर्मिकों को भी कलाई घड़ी भेंट की गई, इसके उपरान्त मुख्य अतिथि की उपस्थिति में संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक ड. चन्दन स्वरूप मीना द्वारा विकसित सोलर एयर कन्डिशनर और वाटर हीटर की तकनीक का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण 'जे लम्बे इन्स्ट्रुट्स' रजिस्ट्रार, महाराष्ट्र को किया गया। यह अभिनव तकनीक, ऊर्जा दक्ष हीटिंग और स्पेस कंडीशनिंग समाधान प्रदान करती है तथा स्वच्छ ऊर्जा एवं कार्बन उत्सर्जन में कमी की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

इसके पश्चात् ड. डीपीक कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, स्थापना दिवस आयोजन समिति ने मुख्य अतिथि पदमश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी उपलब्धियों पर बधाई दी और कहा कि नई तकनीक भवन विज्ञान को नई दिशा देने के साथ-साथ भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए परस्पर सहयोग एवं सकारात्मक सोच तथा प्रेरक वातावरण आवश्यक है। प्रदीप कुमार वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक ने सभी का चन्दावाद किया। इस आयोजन समिति के अध्यक्ष ड. डीपीक कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक रहे। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने समारोह के मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न और शल भेंट की। कार्यक्रम का संचालन प्रो. एसके के. सिंह, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने गृह एवं यांत्रिक अनुप्रयोगों के लिए स्वचालन एवं विश्लेषण (आज्ञा) आईओटी प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। यह प्रयोगशाला चंद्रभानु पटेल, वैज्ञानिक्य कांती सोलंकी, वैज्ञानिक्य तथा ड. एसके पाणिग्राही, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा विकसित की गई है। इसके अतिरिक्त, निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा (छम्पू) और उडी कमीट प्रिंटेड प्रयोगशाला के भ्रमण का संचालन ड. अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक, आशीष पिपल, प्रधान वैज्ञानिक, ड. किशोर कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, ड. चंचल सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक और आशीष कपूर वैज्ञानिक द्वारा किया गया, इसके साथ ही, मुख्य अतिथि ने प्रदर्शनी गैलरी का भी भ्रमण किया। कार्यक्रम का समापन रात्रि गान के साथ हुआ। इस अवसर पर एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया।

Published in: Swatantra Chetna Newspaper



अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित करते अतिथि। संवाद

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 84वां स्थापना दिवस मनाया

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस मनाया।

मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और संस्थापक निदेशक आईआईटी गांधीनगर पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। निदेशक प्रो. आर प्रदीप

कुमार ने स्वागत भाषण दिया और संस्थान के योगदानों पर प्रकाश डाला।

समारोह में सेवानिवृत्त और 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि ने स्वचालन एवं विश्लेषण प्रयोगशाला का उद्घाटन किया निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा एवं 3डी कंक्रीट प्रिंटेड प्रयोगशाला का अवलोकन किया। संवाद

Published in: Dainik Jagran Newspaper



सीबीआरआई की टीम ने किया आपदा क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का सर्वेक्षण

हरिद्वार। मानसून काल के दौरान जनपद में आई बाढ़ एवं आपदाओं से हुई वास्तविक क्षति के आंकलन के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा पोस्ट डिजास्टर नीड्स असेसमेंट प्रक्रिया के तहत गठित सर्वेक्षण टीम ने सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डा.अजय चौरसिया के नेतृत्व में रविवार को जिला आपदा कार्यालय सभागार हरिद्वार में बैठक ली तथा आपदा प्रभावित एवं भूस्खलन क्षेत्रों का भ्रमण एवं सर्वेक्षण किया गया। सचिव एचआरडीए मनीष कुमार सिंह ने बैठक का संचालन करते हुए जनपद को सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक व भौगोलिक स्थिति के बारे में जानकारी देते हुए मानसून काल में हुए नुकसान के बारे में पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से विस्तार से जानकारी दी।

बैठक में सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डा.अजय चौरसिया ने निर्देशित करते हुए कहा कि सभी अधिकारी आपसी समन्वय से बरसात के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में जाने वाली बाढ़ तथा होने वाले नुकसान को रोकने के लिए प्रभावी कार्य योजना बनाकर भारत सरकार में भेजी जाये। उन्होंने सिंचाई विभाग के अभियन्ताओं को निर्देशित करते हुए कहा कि बाढ़ एवं भू-कटाव को रोकने के लिए लॉग ट्रम्प स्थायी समाधान किया जाये ताकि संभावित बाढ़ एवं उसके नुकसान से बचा जा सके। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि हमारे एसेसमेंट इस प्रकार के होने चाहिए कि भविष्य में आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि नदियों के तटबंध से सम्बन्धित प्रस्ताव भी प्रस्तावित की जाये। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में वश आउट हुई सड़कों के लिए भी स्थायी समाधान हेतु प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिये ताकि भविष्य में मार्ग बाधित न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि आंकलन प्राप्त किया जाये तथा जिस क्षेत्रों का कार्य है, उसे उसी क्षेत्रों में

प्रस्तावित किया जाये तथा डेटा देने में विशेष सावधानी बरती जाये। उन्होंने कम्युनिकेशन हेतु प्लान बी के तहत भी कार्य योजना बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने साँवर, डूनेज तथा एसटीपी निर्माण से सम्बन्धित कार्य हेतु भी कार्य योजना के बारे में महत्वपूर्ण निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। बैठक में पोस्ट डिजास्टर नीड असेसमेंट (पंकट) टीम ने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से हरिद्वार जनपद में हुई भारी बारिश-भूस्खलन के कारण हुए जनहानि, पशुहानि एवं क्षतिग्रस्त भवनों का विवरण लिया साथ मानसून सत्र 2025 में हुए क्षति का विभागवार विवरण की जानकारी ली गई।

उन्होंने विद्युत, पिटकुल, सिंचाई, लोनिवि, शिक्षा, चिकित्सा, बाल विकास, सिंचाई सहित अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने पीडीएमए से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। भीमगोदा पुल के पास बार-बार रैलवे ट्रेक पर गिर रहे मलवा स्थल तथा मनसा देवी क्षेत्र में भू-स्खलन सम्भावित क्षेत्रों का भी स्थलीय निरीक्षण किया गया। उन्होंने निरीक्षण के दौरान इन समस्याओं के स्थायी समाधान हेतु महत्वपूर्ण निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये।

इस दौरान अपर जिलाधिकारी वैशेद सिंह नेगी, एनडीएम प्रोफेसर डा.राजगदीप, असि.प्रोफेसर एचपी युनिवर्सिटी डा.एम संगी, स्टेट नोडल अफिसर डा.मोहित कुमार पुनिया, एचआरडीए सचिव मनीष सिंह, उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार, जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा प्रबंधन अधिकारी भोरा रावत, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी श्यामी, जिला परिषदका प्रबंधक संजय सक्सेना, रोज ऑफिसर राजाजी टाडगर रिजर्व ब्रिजेंद्र दत्त तिवारी, जिला पर्यटन अधिकारी सुरतोष नौदियाल सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

my
ity

अमर उजाला



देहरादून |

सोमवार | 8

आरियन रूकल-सप्तमी विक्रम स

amarujala.co

बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए करें स्थायी समाधान

सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक ने दिए अधिकारियों को बैठक में निर्देश

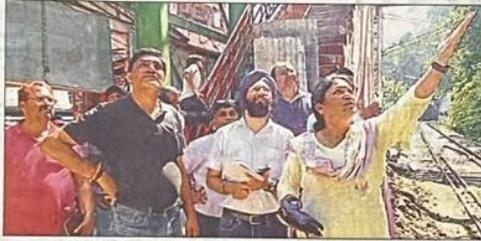
मानसून के दौरान आपदाओं से हुए नुकसान का एनडीएमए की टीम ने किया सर्वेक्षण

संवाद न्यूज एजेंसी

हरिद्वार। विभागों के अधिकारी आपसी समन्वय से एक प्रभावी कार्ययोजना बनाकर केंद्र सरकार को भेजें ताकि भविष्य में बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोका जा सके। सिंचाई विभाग बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए दीर्घकालिक और स्थायी समाधान करें।

यह बात सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया ने रविवार को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) द्वारा गठित सर्वेक्षण टीम की ओर से आयोजित बैठक में कही।

मानसून के दौरान जिले में आई बाढ़ और आपदाओं से हुए नुकसान का आकलन करने के लिए टीम ने हरिद्वार के जिला आपदा कार्यालय सभागार में यह बैठक आयोजित की। बैठक के बाद टीम ने आपदा प्रभावित और भूस्खलन संभावित क्षेत्रों का दौरा भी किया। बैठक में हरिद्वार-रुड़की विकास प्राधिकरण (एचआरडीए) के अधिकारी मनीष



पहाड़ी का निरीक्षण करते सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया। संवाद

भूस्खलन संभावित इलाकों का किया निरीक्षण

टीम ने भीमगोंडा पुल के पास बार-बार रेलवे ट्रैक पर गिरने वाले मलबे वाले स्थल और मनसा देवी क्षेत्र में भूस्खलन संभावित इलाकों का भी निरीक्षण किया और इन समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए।

कुमार सिंह ने जिले की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और भौगोलिक स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मानसून काल में हुए नुकसान का ब्योरा भी प्रस्तुत किया।

इस मौके पर अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेगी, प्रो. डा.गगनदीप, असि.प्रोफेसर एचपी यूनिवर्सिटी डा.एम.शर्मा, स्टेट नोडल ऑफिसर डा.मोहित कुमार पुनिया, उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार, जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा

क्षतिग्रस्त हुई सड़कों के लिए भी बनाएं प्रस्ताव

डॉ. चौरसिया ने जोर दिया कि हमारी संपत्तियां ऐसी होनी चाहिए कि भविष्य में आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने नदियों के तटबंधों से संबंधित प्रस्ताव तैयार करने के भी निर्देश दिए। साथ ही क्षतिग्रस्त हुई सड़कों के लिए भी प्रस्ताव बनाने को कहा ताकि भविष्य में मार्ग बाधित न हों। उन्होंने अधिकारियों को डेटा देने में विशेष सावधानी बरतने और आकलन को उचित श्रेणी में प्रस्तावित करने का निर्देश दिया। संचार व्यवस्था के लिए उन्होंने प्लान बी के तहत भी कार्ययोजना बनाने को कहा। इसके अलावा सोलर, ड्रूनेज और एसटीपी निर्माण से संबंधित कार्यों के लिए भी योजना बनाने के निर्देश दिए गए।

प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी ध्यानी, जिला परियोजना प्रबंधक संजय सक्सेना, रेंजर बृजेंद्र दत्त, जिला पर्यटन अधिकारी सुरील नौटियाल आदि मौजूद रहे।

सहारा लाइव NEWS

हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकतन्त्र स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उपरोक्त

राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता

By Sahara Live News
© SEP 26, 2025



इस कार्यक्रम में मेथोडिस्ट गर्ल्स डिग्री कॉलेज, रुड़की तथा पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय संख्या 1, रुड़की के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों सहित विभिन्न स्कूलों से आए प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त, ट्रेनिंग एवं एकेडमी ऑफ साइंटिफिक एंड इन्वेंटिव रिसर्च (AcSIR) के छात्र-छात्राओं ने भी सक्रिय रूप से सहभागिता की। खास बात यह रही कि बिहार सरकार के 50 नव नियुक्त सहायक वास्तुविदों का एक विशिष्ट दल शैक्षणिक-सह-तकनीकी भ्रमण हेतु संस्थान पहुंचा।

ओपन डे के दौरान प्रतिभागियों के लिए संस्थान के विभिन्न प्रमुख अनुसंधान स्थलों जैसे डॉ. बिलिंग प्रदर्शनी दीर्घा, राष्ट्रीय भूकंप परीक्षण सुविधा, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला एवं ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का सुव्यवस्थित भ्रमण कराया गया। यहाँ उन्हें भूकंप अभियांत्रिकी, अग्नि सुरक्षा, टिकाऊ ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं संरचनात्मक नवाचारों के क्षेत्र में किए जा रहे शोध कार्यों की जानकारी दी गई। यह जानकारी डॉ. नवीन, डॉ. हेमलता, श्री नदीम, डॉ. नीरज एवं ओर भी संस्थान के वैज्ञानिकों कि उपस्थिति में हुआ।

विशेष प्रदर्शनों में श्रीराम मंदिर के सूर्य तिलक तंत्र का मॉडल, नवोदय विद्यालयों के लिए विकसित वास्तु नवाचार तथा खारे क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों के लिए अग्निरोधक घरों की तकनीक शामिल थीं। इन प्रदर्शनों ने आधुनिक विज्ञान के साथ परंपरा के समन्वय और देश की बुनियादी संरचना एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु संस्थान के प्रयासों को उजागर किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को अग्रणी वैज्ञानिकों से सीधे संवाद करने, उन्नत यंत्रों एवं अनुसंधान सुविधाओं को देखने तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के व्यावहारिक पहलुओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर यह भी उल्लेख किया गया कि नई दिल्ली स्थित वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) अपनी 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के नेटवर्क के साथ विश्व की सबसे बड़ी सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित अनुसंधान संस्थाओं में से एक है। भवन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समर्पित एक प्रमुख संस्थान के रूप में सीएसआईआर-सीबीआरआई देश की आधारभूत संरचना के लिए सतत, लचीले एवं अभिनव समाधान विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

यह ओपन डे कार्यक्रम विशेष रूप से अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं वास्तुविदों को प्रेरित करने और उन्हें कक्षा में प्राप्त ज्ञान को वास्तविक तकनीकी प्रगति से जोड़ने हेतु तैयार किया गया था। यह आयोजन जिज्ञासा, नवाचार और वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करने में सफल रहा तथा अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को एक बार फिर सशक्त रूप से प्रदर्शित किया।



Published in: Hindustan newspaper

उत्तराखंड-हिमाचल के छह शहरों में एक तिहाई इमारतें खतरनाक

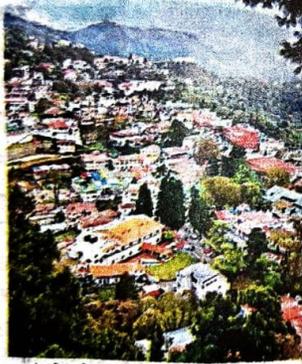
जागरण विशेष

टीका इंडिया • जगदण

रुड़की: उत्तराखंड के कर्णप्रयोग, हिमाचल, मसुरी और हिमाचल प्रदेश के कंसवट, टवाह, पर्वत सहित में एक तिहाई से अधिक इमारतें संरचनात्मक अभियांत्रिकी (स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग) के मानकों पर खरी नहीं हैं। इनकी भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल डिजाइन नहीं किया गया है। इस कारण ये इमारतें टूटने की संभावना में हैं, जिनके भूकंपीय घटनाओं के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका रहती है। इन संरचनाओं में अस्पताल, स्कूल और प्रशासनिक कार्यालय भी चल रहे हैं। यह बात केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के अध्ययन में सामने आई है। अध्ययन की रिपोर्ट गृह मंत्रालय के अर्धन राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को भेजी गई है।

सीबीआरआई रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी व इस परियोजना के प्रोजेक्ट लीडर

- उच्च जोखिम वाले इन भवनों के भूकंप के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका
- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के अध्ययन में सामने आई है यह बात



पहाड़ों की रानी मसुरी • जगदण आर्याइय

डा. अजय चौरसिया ने बताया कि जुलाई 2024 से मार्च 2025 के मध्य यह अध्ययन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भूकंपीय खतरों का मूल्यांकन,

1,000

इमारतों पर प्रत्येक शहर में यह अध्ययन किया गया संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट की टीम की ओर से



सीबीआरआई के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया • छव

4,978 इमारतों में से अधिकांश में रहना जोखिम भरा, तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता

डा. अजय चौरसिया ने बताया कि अध्ययन में शामिल शहर भूकंपीय क्षेत्र चार व पांच में आते हैं। ये शहर तीव्र भू-गति के प्रति संवेदनशील हैं। ये खड़ी ढलानों, अनियमित विकास और संरचनात्मक अभियांत्रिकी की अनदेखी के कारण अधिक जोखिम भरे हैं। इन छह शहरों में 4,978 इमारतें चिह्नित की गई हैं, जिनमें अप्रबलित चिनाई (युआरएम) है। इन्हें तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता है। इन इमारतों में 37,822 लोग रहते हैं।



रिपोर्ट में दिए गए सुझाव

- सभी प्रभावित शहरों में प्राथमिकता के आधार पर संरचनात्मक रेट्रोफिटिंग कार्यक्रम बने।
- आपदाकालीन निवृत्तों और प्रतिष्ठित प्रोटेक्टर।
- वास्तविक समय भूकंपीय निगरानी प्रणालियां।
- संवेदनशील संरचनाओं विशेष रूप से सार्वजनिक और संस्थागत भवनों के रेट्रोफिटिंग को मिले प्राथमिकता, ताकि वहां जोखिम कम हो।
- सभी नए निर्माणों के लिए अनिवार्य भवन कोड के अनुपालन को लागू करना और पालन करना।
- नगर पालिका नियोजन और जोनिंग विनियमों में जोखिम संवेदनशीलता मानचित्रों को एकीकृत करना, ताकि जरूरी कदम उठाए जा सकें।
- आपदा प्रतिरोधी केंद्रों में बुनियादी ढांचे का उन्नयन किया जाए। साथ ही पहुंच, क्षमता और संरचनात्मक मजबूती जरूरी।
- लचीली निर्माण प्रथाओं और आपदा तैयारियों पर सामुदायिक जागरूकता और प्रशिक्षण।

रणनीतियों के लिए मजबूत आधार प्रदान करना था। उनके अनुसार चिह्नित क्षेत्रों का जोखिम मूल्यांकन मानचित्र तैयार करने के लिए एक

व्यापक पद्धति विकसित की गई है। संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट ने प्रत्येक शहर में 1,000 इमारतों पर अध्ययन किया।

Published in: Dainik Jagran newspaper

CBRI Roorkee study found that out of 4,978 buildings surveyed in six cities of Uttarakhand and Himachal, about 40% are unsafe and 1,000 highly dangerous. Many schools, hospitals, and offices lack proper structural design, posing serious risks in earthquake-prone zones. The report calls for urgent reconstruction, strict building code compliance, and earthquake-resistant measures.



Published in: Rashtriya sahara newspaper


 देवरतन, भगलवार
 16 नोवंबर, 2025
 हिन्दुस्तान संस्करण
 मूल र 7.00
 पृष्ठ 20
 www.jagran.com


दैनिक जागरण

सात करोड़ से अधिक आइटोआर चाखिल 15 पाल्ताम पीडिओ के साथ दिखाना चाहते थे एकजुदता 16

रुड़की जागरण

हिंदी में कामकाज की प्रवृत्ति को अपनाने पर दिया जोर

सीबीआरआइ रुड़की में हिंदी पखवाड़ा शुरु, विभिन्न प्रतियोगिताएं होंगी, हिंदी पुस्तक पर किया गया चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ किया गया। इस मौके पर हिंदी में कामकाज करने की प्रवृत्ति को गंभीरता के साथ अपनाने पर जोर दिया गया। वही हिंदी पुस्तक पर चर्चा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

संस्थान में सोमवार को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ विज्ञानी डा. डीपी कानूनगो ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं, जिनमें अपनी मातृभाषा को

अग्रणी माना जाता है। उन्होंने कहा कि बार संस्थान के पुस्तकालय में कार्मिकों के बच्चों को माहौल में एक जकूर लाना चाहिए। ताकि बच्चों में

पुस्तकों को पढ़ने की रुचि बढ़े। साथ ही उन्होंने सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का अनुरोध किया। इस दौरान हिंदी पुस्तक पर चर्चा कार्यक्रम में संस्थान के प्रधान तकनीकी अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने हरिवंश राय बच्चन की पुस्तक 'भूपुराण' पर चर्चा प्रस्तुत की। संस्थान की हिंदी अधिकारी अरुणा चौधरी ने बताया कि हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, अनु भाषा प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए हिंदी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी।

साथ ही कार्मिकों के बच्चों के लिए भी हिंदी कविता पाठ और भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित होंगी। हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण छह अक्टूबर को होगा। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन वीर कर्मकार ने किया। इस मौके पर आयेजन समिति के अध्यक्ष डा. पीसी बपतिवहन, डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, डा. नवल किशोर बंजारा, अरुणा कुमार, हुसैन अतार, अरुण महेश्वरी, मोहर सिंह, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, विनीत सेनी, डा. चंदन स्वरूप मौला, मोहित, दिनेश, भारती आदि उपस्थित रहे।

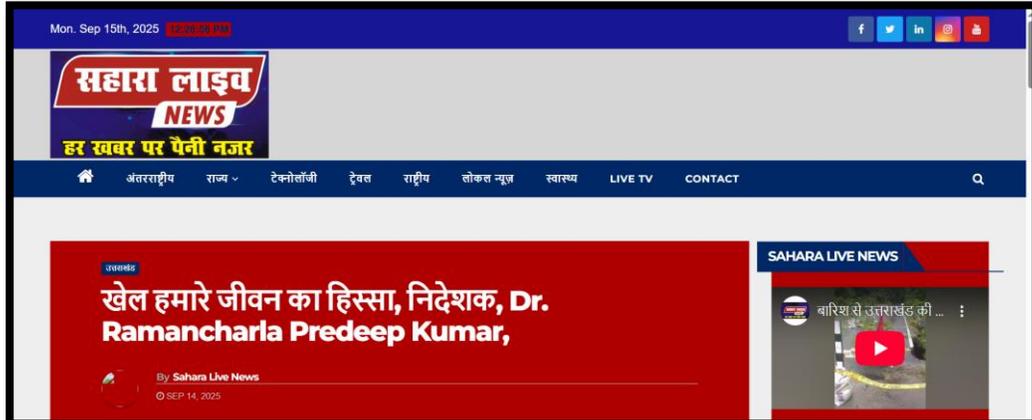


केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में हिंदी पखवाड़े के शुभारंभ के मौके पर हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते विज्ञानी और अन्य * 20/11/25

Published in: Dainik Jagran newspaper

At CSIR-CBRI Roorkee, Hindi Pakhwada was inaugurated with emphasis on adopting Hindi in official work. Various competitions will be organized during the program, and discussions were held on Hindi books to promote the use of Hindi in daily functioning.

CSIR-CBRI in the Limelight | 14.09.2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिस्लिग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में संस्थान परिवार के बीच कबड्डी टीम का आयोजन किया गया।

इस आयोजन का शुभारंभ माननीय निदेशक, Dr. Ramancharla Predeep Kumar, सीबीआरआई द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता में दो टीमों ने भाग लिया:

- टीम-A
हिमांशु शर्मा, शिवम सोलंकी, सुरज कुमार, सोनू, शुभम, मोहद अज़ीम, रजनीश, ए. अरविंद, शुभम, रजनीश
- टीम-B
दिनेश, मनीष, मोहित, हिमांशु, हरजीत, अमित यादव, सोयम कुमार राय, एन के बंजारा, धिपूष, विजेंद्र

मैच का संचालन रेफरी सिद्ध द्वारा किया गया।

यह खेल प्रतिस्पर्धा न केवल कर्मचारियों के बीच आपसी सहयोग और खेल भावना को बढ़ावा देती है बल्कि स्वास्थ्य एवं फिटनेस के प्रति जागरूकता का भी संदेश देती है।

सीबीआरआई परिवार ने उत्साहपूर्वक इस खेल का आनंद लिया और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। इस कार्यक्रम में श्री अमन, श्री अर्पण एवं Dr. Chandan Swaroop Meena भी उपस्थित थे।

सोनु शर्मा + शुभम बेस्ट डिफेंडर, बेस्ट केचर मोहित/मनीष कुमार, टीम A कप्तान श्री हिमांशु शर्मा, टीम B श्री दिनेश विजेता रही , निदेशक महोदय के उद्बोधन में भारत के पारंपरिक खेलों से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ्य व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्वानित रहने के लिए संदेश दिए।

सोनु शर्मा एवं शुभम को बेस्ट डिफेंडर, और बेस्ट केचर मोहित/मनीष कुमार, रहे इन टीमों का नेतृत्व।

हिमांशु शर्मा और दिनेश ने किया, निदेशक महोदय के उद्बोधन में भारत के पारंपरिक खेलों से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ्य व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्वानित रहने के लिए संदेश दिए।

आयोजन में डॉ चंदन स्वरूप मीणा एवं रोवक कर्मेटी अमन कुमार ने भी , अंत में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

ईश्वर चंद संगवदता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9761>

CSIR-CBRI, Roorkee organized a Kabaddi match to promote team spirit, fitness, and traditional sports. Team A's Himanshu Sharma and Team B's Vinesh were winners, while Sobha, Shubham, and Mohit received Best Player awards. The event was graced by Director Dr. Ramancharla Pradeep Kumar and Dr. Chandan Swaroop Meena.

CSIR-CBRI in the Limelight | 01.09.2025



Published in: Rashtriya sahara newspaper

CSIR-CBRI team completed the structural survey of Tungnath temple to assess its stability. Using advanced techniques, they studied construction, materials, and condition of the temple. The data will help in its preservation and restoration.

CSIR-CBRI in the Limelight | 31.08.2025

सहारा लाइव
NEWS

हर खबर पर पैनी नजर



अंतरराष्ट्रीय

राज्य

टेक्नोलॉजी

ट्रेवल

राष्ट्रीय

लोकल न्यूज़

स्वास्थ्य

LIVE TV

CONTACT

उत्तराखंड

खेल हमारे जीवन का अंग, डॉ आर प्रदीप कुमार निदेशक CBRI



By Sahara Live News

□ AUG 31, 2025





राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में 29 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक विभिन्न स्वास्थ्य एवं फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया।

29 अगस्त को भारत माँ के वीर सपूत एवं हॉकी जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के अवसर पर संस्थान परिवार ने सामूहिक प्रतिज्ञा ली कि वे स्वयं को स्वस्थ एवं फिटनेस वॉक के साथ-साथ अपने मित्रों और परिवारजनों को भी स्वस्थ जीवनशैली अपनाने हेतु प्रेरित करेंगे।

इसके उपरांत, 30 अगस्त की प्रातः 7:30 बजे कॉलोनी वासियों एवं संस्थान के अनेक कार्मिकों ने cycling में भाग लिया।

31 अगस्त की सुबह 7:30 बजे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूनगो एवं वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक के द्वारा हरी झंडी दिखाकर साइकिल यात्रा का शुभारंभ किया गया। यह यात्रा उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई और समापन फलाहार एवं भारत माँ के वीर सपूत मेजर ध्यानचंद जी के जयघोष के साथ हुआ।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ आर प्रदीप कुमार ने संदेश दिया कि खेल, पैदल चलना, साइकिलिंग और स्वस्थ आहार न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं बल्कि सामूहिक एकता और सामाजिक सौहार्द को भी मजबूत करते हैं।

ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9715>

CSIR-CBRI, Roorkee celebrated National Sports Day (29-31 Aug 2025) with fitness pledge, cycling events, and a bicycle rally. Director Dr. Pradeep Kumar highlighted the importance of sports, walking, cycling, and a healthy lifestyle.

4 हरिद्वार: दैनिक हाक, शनिवार, 30 अगस्त 2025 **रुड़की**

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा

एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को तकनीक हस्तांतरित

रुड़की (दैनिक हाक): दर्ब को, जब संस्थान द्वारा सीएसआईआर, केंद्रीय भवन विकसित प्रौद्योगिकी "120 मिन्ट" सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस के इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक शीमली बानीओ नयक, श्रीमती सुरशीला वर्मा उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप

सीमित करने में मदद करते हैं। अस्पतालों, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े मानव-आवासीय स्थायी इमारतों जैसे महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है। विकसित आग्नि रूपा से अग्नि अवरोधित दरवाजों का परीक्षण आई एस ओ. 834 मानक ताप चक्र का पालन करते हुए, आईएस 3614:2021 के अनुसार 120 मिन्ट तक किया गया। दरवाजे ने 30 मिन्ट तक आग्नि अग्नि रोधित के मानकों को पूरा किया और पूरे 120 मिन्ट तक अपनी अखंडता और स्थिरता बनाए रखी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार को गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डॉ. पी. कामेश्वर, डॉ एस. के. पाणिग्रही, डॉ. सौरव जैन, डॉ. नंदीय अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमति माधवी देवी, एचम यमरत तकनीकी व परिवर्तन स्टार इत्यादि उपस्थित रहे।



अनुसंधान संस्थान, सीबीआरआई को लिए आगिक रूप से अग्नि विकसित हुई है। कुमार के कर-कर्मलों द्वारा किया ने शुक्रवार को इमारतों में आग रोधित एकल पल्ले वाला एक इस अवसर पर कंपनी के गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे को आपदा को निर्यात करने के तरफ खुलने वाला धातु का प्रतिनिधि तापम दास प्रबंध आग लगने के दौरान लपटों, लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि समिञ्चित दरवाजा।'' का निदेशक, मानस दास निदेशक, खुर्दा और गर्मी की गति को

Presented in Newspaper: Dainik Hak

epaper **हिन्दुस्तान**

Share Copy url Save Font Size D'load Image Image Text Listen

रुड़की में सीबीआरआई ने बनाया अग्नि अवरोधित विशेष दरवाजा

02 बंटे तक कमरे से बाहर नहीं फैलेगी आग

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई रुड़की ने इमारतों में आग को आपदा को निर्यात करने के लिए एक विशेष प्रकार के दरवाजा विकसित किया है। जो किसी इमारत या मकान के कमरे में आग लगने के 2 घंटे तक आग को दरवाजे से बाहर फैलने से रोक सकता है। कमरे में एक हजार डिग्री तापमान होने के बावजूद भी यह दरवाजा कारगर साबित होगा। संस्थान द्वारा शुक्रवार को एस्कई इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड खुर्दा औद्योगिक एस्टेट ओडिशा को यह तकनीक हस्तांतरित किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक विकसित हुई है। मौके पर कंपनी के प्रबंध निदेशक मानस दास, सुरशीला वर्मा उपस्थित रहे। जिन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण कीं। जिनका हस्तांतरण सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के द्वारा किया गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने के दौरान लपटों, धुंध और गर्मी को गति को सीमित करने में मदद करते हैं। अस्पतालों, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल अन्य बड़े मानव-आवासीय स्थायी इमारतों जैसे महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है। इस दौरान वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. पी. कामेश्वर, डॉ. एस. के. पाणिग्रही, डॉ. सौरव जैन आदि मौजूद रहे।

सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने बताया कि अगर किसी मकान के कमरे में सबसे पहले दरवाजे या डिंडली से होकर ही आग लगे और फैलेगी है। जिससे की कई बार बड़ी जनहानि हो जाती है। उन्होंने बताया कि अगर इस दरवाजे को लगा दिया जाए तो करीब 2 घंटे तक इस कमरे से आग बाहर को नहीं फैलेगी। जिससे आवासीय से उस मकान या इमारत में मौजूद लोग बाहर निकल सके।



रुड़की सीबीआरआई में शुक्रवार को अग्निरोधित एकल पल्ले वाला एक तरफ खुलने वाला धातु का समिञ्चित दरवाजा का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। • हिन्दुस्तान

Presented in Newspaper: Hindustan



Uk Bharat
सत्य की खोज

Home / Uncategorized / सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

Dehradun | Haridwar | Roorkee | Uncategorized

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

© Uk Bharat | August 29, 2025



सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने भवन निर्माण क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान ने "120 मिनट के लिए आंशिक रूप से अग्नि रोधित, एकल पल्ले वाला, एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा" विकसित कर उसकी प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया।

इस अभिनव तकनीक का विकास डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं उनकी शोध टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कंपनी की ओर से प्रबंध निदेशक श्री तापस दास, निदेशक श्री मानस दास, श्रीमती बानीश्री नायक और श्रीमती सुशीला वर्मा उपस्थित रहे। प्रौद्योगिकी का औपचारिक हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के कर-कमलों से संपन्न हुआ।

विशेषज्ञों के अनुसार, अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने की स्थिति में लपटों, धुँएँ और गर्मी के प्रसार को सीमित करने में मदद करते हैं। इनका उपयोग अस्पतालों, कार्यालयों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े सार्वजनिक भवनों में सुरक्षा हेतु किया जाता है।

संस्थान द्वारा विकसित दरवाजे का परीक्षण आईएसओ 834 मानक ताप वक्र का पालन करते हुए आईएस 3614:2021 के अंतर्गत किया गया। दरवाजे ने 30 मिनट तक आंशिक अग्नि-रोधित मानदंडों को पूरा किया और पूरे 120 मिनट तक अपनी अखंडता व स्थिरता बनाए रखी।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सौरभ जैन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमती गायत्री देवी सहित तकनीकी और परियोजना स्टाफ मौजूद रहा।

Published in :- <https://ukbharat.com/csir-cbri-work-for-fair/>

CSIR-CBRI, Roorkee developed a fire-resistant composite metal door (120-minute rating) and successfully transferred the technology to S.K. Engineers India Pvt. Ltd., Odisha.

CSIR-CBRI in the Limelight | 21.08.2025

सहारा लाइव NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकत न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उत्सव
शोध और प्रयास से सीबीआरआई रुड़की को बड़ी सफलता

By Sahara Live News
© AUG 21, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा पिडिलाइट उद्योग को द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

दिनांक : 21 अगस्त 2025

रुड़की स्थित सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने 21 अगस्त 2025 को भवन निर्माण क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की, जब संस्थान द्वारा विकसित दो अभिनव प्रौद्योगिकियों का सफलतापूर्वक हस्तांतरण पिडिलाइट इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड, मुंबई को किया गया। दोनों प्रौद्योगिकियां श्री राजेश कुमार शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के शोध और प्रयासों से विकसित हुई हैं। इस अवसर पर कंपनी के प्रतिनिधि डॉ. अनिल बांडेले (वरिष्ठ उपाध्यक्ष, पिडिलाइट उद्योग) उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकियाँ औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने की प्रौद्योगिकियों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—संरचनात्मक ग्रेड/भार-वहन करने वाला हल्का कंक्रीट, ढलाई के समय किसी यांत्रिक कंपनी की आवश्यकता नहीं होने वाली स्वसंपीड्य प्रकृति, नव पीढ़ी का सीमेंट अर्थात् एलसी3 (LC3) प्रौद्योगिकी के कारण क्लोराइड प्रवेश और सल्फेट आक्रमण के विरुद्ध बेहतर ये नवाचार संयुक्त राष्ट्र (UN) के सतत विकास लक्ष्य- 9, 11 और 12 के अनुरूप हैं। द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. एस. के. पाणिग्राही, एवं समस्त तकनीकी व परियोजना स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9680>

On 21st August 2025, CSIR-CBRI Roorkee transferred two innovative construction technologies to Pidilite Industries, including a self-compacting lightweight concrete and advanced LC3 cement. These sustainable technologies support UN SDGs and were developed under the leadership of Chief Scientist Rajesh Kumar Sharma.



Dehradun: The Aug 5 flash flood in Uttarakash's Dharali was likely triggered by a "cloudburst-induced moraine debris flow along the Kheer Gad stream", as per a five-member multi-institutional team of scientists who spent four days surveying the areas flattened by the deluge.

Advertisement

Tired of too many ads? [Go Ad Free Now](#)

"The debris may have accumulated from a past event, obstructing the stream's course, which then breached catastrophically," said Shantanu Sarkar, director of Uttarakhand Landslide Mitigation and Management Centre (ULMMC), who led the team. The scientists from ULMMC, Geological Survey of India, IIT Roorkee, Wadia Institute of Himalayan Geology, and the Central Building Research Institute (CBRI) surveyed Dharali and Harsil between Aug 13 and 16. They interviewed locals, ground search teams, and village elders before returning to Dehradun on Saturday.

"A key part of the exercise was attempting to reach the glacier site but thick cloud cover prevented us from reaching the glaciated portion directly", said Sarkar. However, the team was the first to conduct an aerial survey of the affected area after the tragedy. He added, "Our chopper ascended to around 8km above Dharali. We observed the Kheer Gad stream and the debris." Sarkar said that once cloud-free satellite images of the glaciated area are available, the team will finalise its findings in a report which will be submitted to the govt.

Advertisement

Debi Prasanna Kanungo, chief scientist at CBRI, added, "Combined rainfall and snowmelt likely triggered the cloudburst-induced glaciofluvial debris flow due to elevated daytime temperatures. Data from Wadia Institute shows around 100mm of rainfall occurred on Aug 4 and 5 in the area. This substantial precipitation, combined with snowmelt runoff, appears to have played a critical role in mobilising the debris."

Based on the aerial survey, the team has ruled out both Glacial Lake Outburst Flood (GLOF) and Landslide Lake Outburst Flood (LLOF) as causes of the flash flood. "We did not see any fresh active landslide marks for LLOF along the Kheer Gad or depressions that could indicate a glacial lake for GLOF," Kanungo said.

The scientists also dismissed the possibility of an ice-rock avalanche. "In the 2021 Rishiganga disaster in Chamoli, debris travelled nearly 25km and carried huge ice and rock pieces. Here, the debris moved just 8km and contained no ice or large rocks. We specifically asked locals and rescue teams about sightings of ice and rock, but they denied it, which rules out the avalanche theory," the team noted.

Advertisement

Published in :- https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/1st-aerial-survey-by-scientists-identifies-cloudburst-induced-debris-flow-as-likely-trigger-of-dharali-flood/amp_articleshow/123349265.cms

The August 4, 2025 flash flood in Uttarakhand's Chaurali area was likely caused by a cloudburst-triggered landslide that deposited moraine debris into the Kheer Ganga stream, blocking it and leading to a glacial lake outburst. A team of scientists from various institutes found no signs of a major avalanche but confirmed rainfall and temperature shifts played key roles in triggering the disaster.

कुदरत का कहर

2000 से अधिक फूट फीटद टैटरानुन से हेलेकाप्टर से भेजे गए हैं आपदा प्रभावित क्षेत्र धरती में



रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बवं, भूकंप, भूखलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर लील, बादल फटना, बाढ़ की दृष्टि से हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। आपदा से निपटने के लिए होमवर्क जरूरी है। यही वजह है कि आपदाओं के लिए प्राचीन काल में परंपरागत तरीके से निर्माण कार्य किया जाता था, जो आपदाओं से निपटने के लिए होमवर्क जरूरी है। यही वजह है कि आपदाओं के लिए प्राचीन काल में परंपरागत तरीके से निर्माण कार्य किया जाता था, जो आपदाओं से निपटने के लिए होमवर्क जरूरी है।

आपदाओं का जोखिम कम करने को मजबूत प्रबंधन की जरूरत

आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण व तैयारी और बाद में प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण

2013 की आपदा उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान का। चौरसिया के अनुसार विमानन में 2023 की आपदा के कारण वही के प्रबंधन को करीब 10 हजार करोड़ रुपये का खर्च हुआ और उत्तराखंड को 2013 की आपदा के बाद 198 से आठ हजार करोड़ रुपये का खर्च हुआ।

संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया का। डा. चौरसिया बताते हैं कि आपदा प्रबंधन योजना के उद्देश्य को ध्यान में रखकर संरचना (सब-आरआइ) रुड़की के

2023 में जनरद के ही सिलकागार में निर्माणवादी नुनन दहने से कने व 41 प्रतिक

दैनिक जागरण
हरियाणा/हरियाणा, 8 अगस्त, 2025
www.jagran.com

दैनिक जागरण
हरियाणा
मूल्य ₹ 20
www.jagran.com

3
मौ

Presented in Newspaper: Dainik Jagran

प्राथमिक कक्षा से ही पढ़ाया जाए आपदा प्रबंधन

रुड़की: भारतीय हिमालय क्षेत्र भूकंप, भूखलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर लील, बादल फटना, बाढ़ की दृष्टि से हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। आपदा से निपटने के लिए होमवर्क जरूरी है। यही वजह है कि आपदाओं के लिए प्राचीन काल में परंपरागत तरीके से निर्माण कार्य किया जाता था, जो आपदाओं से निपटने के लिए होमवर्क जरूरी है। यही वजह है कि आपदाओं के लिए प्राचीन काल में परंपरागत तरीके से निर्माण कार्य किया जाता था, जो आपदाओं से निपटने के लिए होमवर्क जरूरी है।

350 प्रतिशत अधिक भार सहने की क्षमता

डा. चौरसिया के अनुसार, सीबीआरआइ ने कन्फाईड तकनीकी की सफलतापूर्वक टेस्टिंग की है। प्रयोगशाला में जांच के दौरान पाया गया कि कन्फाईड मेसनरी से निर्मित निर्माण में सामान्य पिनाई के मुकाबले 350 प्रतिशत अधिक भार सहने की क्षमता है।

कन्फाईड मेसनरी तकनीक का करें उपयोग

डा. अजय चौरसिया बताते हैं कि भवन निर्माण में कन्फाईड मेसनरी तकनीक का उपयोग करना चाहिए। इस तकनीक से भवन भूकंपरोधी व अन्य आपदाओं से निपटारा जा सकता है। इसमें स्थानीय निर्माण सामग्री का इस्तेमाल होता है। इस तकनीक में दीवार के दोनों

पहाड़ों में ढलान पर न हो निर्माण

डा. चौरसिया बताते हैं कि पहाड़ों में ढलान पर निर्माण नहीं होना चाहिए। इससे जब तीव्र गति से वर्षा का पानी आया तो इमारत को

अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया

से सबक लेते हुए तैयारियों पर जोर दिया। यही वजह है कि ताइवान में वर्ष 2024 में 7.2 तीव्रता का भूकंप आने पर 10 से भी कम लोगों की जान गई। जबकि, वर्ष 1999 में इसी देश में 7.6 तीव्रता के भूकंप में

सीबीआरआइ रुड़की के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया

लगाभ 2500 लोगों की जान गई थी और हजारों इमारतें तबाह हो गई थीं। डा. अजय चौरसिया के अनुसार, पूर्व में जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड व हिमाचल में पारंपरिक तकनीक काठकुनी से भवनों का निर्माण किया

Presented in Newspaper: Jagran

जोखिम कम करने को चाहिए मजबूत प्रबंधन

टीमा डेडिफ़ायल = जगन्नाथ



रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बादल फटना आदि की दृष्टि से संवेदनशील है। क्योंकि, वह नया एवं कमजोर पर्वत है। वहीं, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में धराली जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम हमेशा बना रहता है। इसलिए इन राज्यों में मजबूत आपदा प्रबंधन योजना बेहद जरूरी है। इससे भले ही प्राकृतिक आपदाओं को रोका न जा सके, लेकिन जान-माल के खतरे को काफी कम किया जा सकता है। यह कहना है केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया का।

डा. चौरसिया बताते हैं कि आपदा प्रबंधन योजना के छह कंपोनेंट (अवयव) होते हैं। जिसमें किसी भी प्रकार की आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण (मिटिगेशन) और तैयारी शामिल है। जबकि, आपदा के बाद प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता। इसे में बाकी पांच कंपोनेंट पर विशेष

राहत की पहले से हो तैयारी विज्ञानी डा. चौरसिया कहते हैं कि आपदा के बाद राहत एवं बचाव कार्य में काफी दिक्कत आती है। ऐसे में धराली जैसी आपदा के पीड़ितों को तुरंत राहत पहुंचाने के लिए पहले से व्यवस्था होनी चाहिए। सर्वे करके कुछ सुरक्षित स्थानों पर स्कूल, अस्पताल आदि में कमरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ताकि किसी भी प्रकार की आपदा आने पर पीड़ितों को तत्काल राहत पहुंचाई जा सके।

ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनके पालन की सख्त जरूरत है। चिंता की बात है कि पर्वतीय क्षेत्रों में करीब 85 प्रतिशत गैर इंजीनियर्ड इमारतें हैं। यानी इन्हें किसी पेशेवर इंजीनियर की ओर से डिजाइन एवं प्रमाणित नहीं किया गया है। नियमानुसार नदियों के

उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान डा. चौरसिया के अनुसार हिमाचल में 2023 की आपदा के कारण वहां के पर्यटन को करीब 10 हजार करोड़ रुपये का सालाना और उत्तराखंड को 2013 की आपदा के बाद छह से आठ हजार करोड़ रुपये का सालाना नुकसान हुआ था। आपदा का प्रभाव लंबे समय तक रहता है, इसलिए जोखिम को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए।

50 मीटर के दायरे में मकान आदि का निर्माण नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके पहाड़ी क्षेत्रों में नदियों के आसपास निर्माण हो रहा है। उनके अनुसार 2023 में जोशीमठ भूधंसव की वजह नियमों का पालन नहीं होना था। जोशीमठ में लूज मलबे में लोगों ने मकान बना रखे हैं। डूनेज की कोई व्यवस्था नहीं है।

विशेषज्ञों ने आपदाग्रस्त क्षेत्र में की पड़ताल

उत्तरकाशी। धराली में आपदा से प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण करने और इस घटना के संभावित कारणों को जानने के लिए शासन की ओर से गठित विशेषज्ञों की टीम बुधवार को धराली पहुंची।

टीम ने प्रभावित क्षेत्र में आपदा से हुए नुकसान, उसकी प्रवृत्ति और कारणों की मीके पर पड़ताल की। पांच सदस्यीय विशेषज्ञों की यह टीम पूरे आपदाग्रस्त क्षेत्र का सर्वे करने के बाद अपनी रिपोर्ट शासन को सौंपेगी।

विशेषज्ञों की इस टीम में उत्तराखंड भूस्खलन शमन एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक शांतनु सरकार, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के निदेशक रवि नेगी, वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अमित कुमार, उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण और प्रबंधन केंद्र के प्रधान सलाहकार मोहित कुमार शामिल हैं। बुधवार को विशेषज्ञों ने धराली में फले मलबे के नमूनों को भी परखा। खीरगंगा के प्रवाह क्षेत्र और मलबे के प्रसार का भी जायजा लिया।

स्थानीय लोगों से घटना के बारे में जानकारी प्राप्त की। बुधवार को भी विशेषज्ञों की टीम धराली में अलग-अलग स्थानों पर जाकर बीते पांच अगस्त को खीर गंगा में आई तबाही के कारणों को तलाशने का काम करेगी। जात हो कि यह टीम दो दिन से मौसम खराब होने के कारण प्रभावित क्षेत्र में नहीं पहुंच सकी थी। ब्यूरो

Presented in Newspaper: Jagran

Dr. Ajay Chourasia, senior scientist at CSIR-CBRI, emphasizes the need for strong disaster management through risk assessment, early warnings, and preparedness. Citing the 2013 Kedarnath and 2023 Uttarakhand disasters, he highlights the importance of coordinated response and long-term recovery to reduce future risks.

पब्लिक न्यूज़
राष्ट्रीय
5

सीबीआरआई रुड़की और एचपीएसडीएमए का संयुक्त प्रयास आपदा प्रबंधन में नई दिशा

संक्षेप रूप से

रुड़की में "सुशम प्रॉपर्टीज एंड बिल्डर्स" के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसका संचालन करिष्मा वैजानिक "इंजीनियरिंग एंडोर्समेंट" द्वारा किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य "सुशम प्रॉपर्टीज एंड बिल्डर्स" को "सुशम प्रॉपर्टीज एंड बिल्डर्स" के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसका संचालन करिष्मा वैजानिक "इंजीनियरिंग एंडोर्समेंट" द्वारा किया गया।



जो "सुशम प्रॉपर्टीज एंड बिल्डर्स" के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसका संचालन करिष्मा वैजानिक "इंजीनियरिंग एंडोर्समेंट" द्वारा किया गया।

SHUSHAM PROPERTIES AND BUILDERS

Rudki, Moh. Mandi, Meerut

Published in Public News Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.07.2025

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

• The Voice Of Nation

Dr Rakesh Vashishtha

News Room Roorkee –CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.



Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Voice of Nation"

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.



• The Times Of Suncity
(Dr Rakesh Vashishtha) N.O. Roorkee

CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.

Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Times of Suncity"

CSIR-CBRI Roorkee released a book titled "*Low-Cost Construction Technologies (1947–2025)*" by Ar. S.K. Negi on 30th July 2025, showcasing affordable, sustainable, and disaster-resilient building solutions. The launch was led by CBRI Director Prof. R. Pradeep Kumar and senior scientists.

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.07.2025

उत्तराखंड

Skill Initiative Program.



By Sahara Live News

○ JUL 28, 2025



Inauguration of Five-Day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation at CSIR-CBRI, Roorkee
Roorkee, July 28, 2025:

A five-day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation commenced today at CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. Scheduled from July 28 to August 1 2025, the workshop is sponsored by the Himachal Pradesh State Disaster Management Authority (HPSDMA) and coordinated by Er. Ashish Pippal, Senior Scientist, CSIR-CBRI. The inaugural session was graced by the Chief Guest, Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, along with Ar. S.K. Negi, Chief Scientist, and other eminent dignitaries including Dr. Ajay Chaurasiya, Sh. Nadeem Ahmad, Dr. Leena Chaurasiya, Dr. Chandan Swaroop Meena, and Dr. Naveen Nishant. Along with that, Sh. Rajnish Kumar, Technical Assistant, Ms. Sanskriti Sharma, Sh. Amzad, Sh. Mahesh, and other staff members from the ODS Division also extended their valuable support and presence. Dr. Ajay Chaurasia briefed the participants about the objectives and structure of the training program. He motivated the participants by highlighting the importance of such technical workshops in enhancing practical knowledge and skills. Thereafter, Ar. S.K. Negi expressed heartfelt appreciation for the unwavering support and trust shown by the Himachal Pradesh Government towards CSIR-CBRI. He remarked that such collaborations not only strengthen institutional ties but also play a pivotal role in advancing safer and more resilient infrastructure across vulnerable regions. Director Prof. R. Pradeep Kumar, in his inaugural address underlined the importance of hands-on training and real-world experience in the field of structural engineering. He remarked, "It is through practice that knowledge becomes wisdom. In hilly regions, the risk of structural failures is significantly higher, and hence, engineers must meticulously examine every aspect on the ground." He also introduced the participants to CSIR-CBRI's vision, capabilities, and ongoing research in earthquake-resistant construction and retrofitting technologies. The vote of thanks was proposed by Sh. Nadeem Ahmad, Chief Scientist, who extended a warm welcome to all participants and conveyed his best wishes for a productive and enriching training experience. He acknowledged the collective efforts of the organizing team and emphasized the value of collaborative learning in strengthening disaster resilience. The training program comprises expert lectures, technical sessions, and hands-on demonstrations designed to enhance the practical skills and awareness of engineers and professionals engaged in structural safety and disaster risk mitigation.

Ishwar chand reporter sahara tv uttrakhand

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9548>



Published in Hindustan Newspaper



सीबीआरआई में स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ करते संस्थान के निदेशक • संस्थान

सीबीआरआई में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर शुरू

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में सोमवार को स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण जरूरी है। जिस तरह की लाइफ स्टाइल हो चली है उसमें तमाम विकार शरीर में उत्पन्न हो रहे हैं। इनको शुरुआत में

अनदेखा करने से बाद में यह बड़ी बीमारी बन जाते हैं। आज डायबिटीज, ब्लड शुगर, कोलेस्ट्रॉल का बढ़ना, हाई बीपी आदि की समस्या बढ़ती जा रही है। यह शिविर 30 जुलाई तक चलेगा। सोमवार को संस्थान के 55 प्रतिभागियों ने स्वास्थ्य जांच कराई। इस मौके पर समन्वयक सीबीआरआई के डा. राजेश कुमार वर्मा, सह समन्वयक डा. नीरज जैन आदि मौजूद रहे।

Published in Dainik Jagran

CSIR–CBRI, Roorkee started a five-day training on Seismic Retrofitting and DPR Preparation on 28 July 2025, supported by HPSDMA. Inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, the program focuses on practical training for disaster resilience and structural safety.

Shah directs formation of team to address Himachal natural disasters

Jayashree Nandi

letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Union home minister Amit Shah has directed the formation of a multi-sectoral central team to study and address increasing frequency and intensity of natural disasters in Himachal Pradesh, the ministry of home affairs (MHA) said in a statement.

In a recent meeting chaired by

Shah, it was observed that the Himalayan state has witnessed an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread loss of life, damage to infrastructure, livelihoods and environmental degradation.

To address these concerns, the MHA constituted a multi-sectoral central team, comprising experts from National Dis-

aster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, Geologist, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore, the statement said.

At least 85 lives have been lost, and 34 people are still missing in rain-related incidents in the hill state in the ongoing monsoon so far.

→P8

Published in Hindustan Times Newspaper

Set up multi-sectoral team for natural disasters, says Shah

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: In view of the increasing frequency and intensity of natural disasters and the need to mitigate losses, Union home minister Amit Shah on Sunday directed the formation of a multi-sectoral central team.

Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported due to an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread damage to infrastructure and environmental degradation in the state.

The multi-sectoral central team would comprise experts from National Disaster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore.

To provide immediate relief to affected people in Himachal Pradesh, the Union govt has already deputed an Inter-Ministerial Central Team (IMCT) for a



Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported

first-hand assessment of the damages. IMCT is visiting the affected areas of the state from July 18-21.

A high-level committee chaired by Shah has already approved an outlay of over Rs 2,006 crore to Himachal Pradesh for recovery and reconstruction in areas affected by disasters like floods, landslides and cloudbursts in 2023, releasing the first instalment of this package (Rs 451 crore) on July 7.

Earlier on June 18, Centre released an instalment of Rs 198 crore for relief measures in Himachal Pradesh under State Disaster Response Fund.

Published in Times New Network Newspaper

हिमाचल प्रदेश में आपदाओं पर केंद्र गंभीर, बनाएगा विशेष टीम

गृह मंत्री शाह का निर्देश-पता लगाएं, क्यों बढ़ी आपदाएं

अमर उजाला ब्यूरो



नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में बाढ़ फटने, अचानक बाढ़ आने और भूस्खलन की बढ़ती घटनाओं पर केंद्र सरकार गंभीरता से ध्यान दे रही है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति के कारणों का पता लगाने के लिए एक बहु-क्षेत्रीय समिति के गठन का निर्देश दिया है। इसमें कई प्रमुख संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल होंगे।

गृह मंत्री शाह की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में इस बात पर संघन किया गया कि हिमाचल प्रदेश में बाढ़ल फटने, भूस्खलन और भूस्खलन खरिशा की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई है। इससे राज्य में व्यापक जनहानि, बुनियादी ढांचे और आजीविका को नुकसान और पर्यावरण क्षरण भी हुआ है।

शाह ने तुरंत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एडीएमए), केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीसीआईआरआई) रुड़की, भारतीय उल्काप्रेषण मीसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) पुणे, भूविज्ञानी और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के विशेषज्ञों को एक बहु-क्षेत्रीय केंद्रीय टीम गठित करने का निर्देश दिया।

बैठक में कहा गया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, केंद्र सरकार आपदाओं के समय बिना किसी भेदभाव के राज्यों के साथ मजबूती से खड़ी है। अमित शाह की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति वर्ष

अंतर-मंत्रालयी दल ले रहा हवापत का जायजा. हिमाचल प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मानसून 2025 के दौरान बाढ़, अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन के मद्देनजर केंद्र सरकार राज्य के ज्ञान के ज्ञान का इजाजत किए बिना ही नुकसान के प्रत्यक्ष आकलन के लिए एक अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय दल को 18 जुलाई को ही भेज चुका है। वह केंद्रीय दल 21 जुलाई तक राज्य के प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करेगा।

अन्य राज्यों को भी लगातार का जा रही है मदद. हिमाचल प्रदेश के आपदा प्रबंधन लोगों को सहायता के लिए केंद्र सरकार 18 जून को राज्य आपदा मोचन निधि से 198.80 करोड़ रुपये की केंद्रीय हिस्सेदारी की पहली किस्त भी दे चुकी है। केंद्र ने हिमाचल समेत सभी राज्यों को अवैतनिक राष्ट्रीय आपदा मोचन खात (एडीआरएफ) टॉप, सेना टोपी और वायु सेवा की तेजगती सहित सभी प्रकार की राहत सहायता भी प्रदान की है।

2023 के लिए आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास और पुनर्निर्माण के लिए हिमाचल प्रदेश को 2006.40 करोड़ के परिणय को पहले ही मंजूरी दे चुकी है। 7 जुलाई 2025 को 451.44 करोड़ रुपये को पहली किस्त भी जारी कर दी गई थी।

Published in Amar Ujala Newspaper

Union Home Minister Amit Shah has called for the formation of a multi-sectoral central team to tackle natural disasters, following increased incidents in Himachal Pradesh. The proposed team will include experts from various institutions like CSIR-CBRI and focus on damage assessment, infrastructure restoration, and long-term disaster management planning.



ओडीएस प्रमुख श्री नदीम अहमद ने युवाओं में व्यावहारिक कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का निर्माण उद्योग उन्नत तकनीकों और स्मार्ट समाधानों की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है।

इस कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व में श्री रजनीश सहित आउटरीच एवं प्रचार-प्रसार सेवा प्रभाग (ओडीएस) की टीम ने उत्कृष्ट समन्वय किया। प्रतिभागियों को ऊर्जा दक्ष भवन निर्माण, स्मार्ट निर्माण प्रणालियाँ और टिकाऊ तकनीकों पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी अनुभव रहा।

Published in :- <https://bahadradnews.com/csir-cbri-grand-closing-of-three-day-national-training-in-roorkee-energy-of-energy-and-sustainable-building-construction-techniques-received-by-the-youth/>

CSIR-CBRI in the Limelight | 16.07.2025

उत्तराखंड

“Latest Trends in Building Construction



By Sahara Live News

© JUL 16, 2025



Three-Day Training Program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" Begins at CSIR-CBRI, Roorkee

Roorkee, July 16, 2025 — A three-day national-level training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" commenced today at the CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee. Scheduled from July 16 to 18, the program is specially designed for trainee students from various technical institutes across India, aiming to expose them to cutting-edge innovations and sustainable practices in the field of building construction.

The training program was inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI. In his inaugural address, Prof. Kumar highlighted the importance of staying abreast of technological advancements in the construction sector. He stated, "Innovations are continuously reshaping the building construction landscape. It is crucial for today's youth to be aware of sustainable, advanced, and environmentally friendly technologies. This program will not only impart practical knowledge but also instill confidence in young professionals to face future challenges." He also underlined the significance of both academic education and value-based learning for holistic development.

The inauguration began with a warm welcome to all participants by Shri Nadeem Ahmad, Chief Scientist. The training is being coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, and includes a series of expert sessions on vital topics such as precast construction systems, prefabricated construction technology, energy-efficient building design, and smart construction methods.

To provide experiential learning, the program also features guided tours of CSIR-CBRI's state-of-the-art labs at CSIR-CBRI, Roorkee, allowing participants to witness firsthand the practical application of the technologies discussed.

Present during the inauguration were Er. Ashish Pippal, Dr. Chandan Swaroop Meena, Mr. Rajnish Kumar (Technical Assistant), and other members of the Outreach and Dissemination Services (ODS) team. The inaugural session concluded with a vote of thanks by Er. Ashish Pippal, who urged participants to make the most of this learning opportunity and channel their knowledge towards meaningful societal and academic contributions.

Certificates will be distributed to all participants during the closing ceremony on July 18, marking the successful culmination of this impactful training initiative.

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9509>

CSIR-CBRI Roorkee held a three-day training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" from July 16–18, 2025, for technical students across India. The program featured expert sessions, lab visits, and hands-on demonstrations on modern, sustainable construction practices.

CSIR-CBRI in the Limelight | 03.07.2025

UNCATEGORIZED

सीबीआरआई रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया

by Jan Mudde · 2 weeks ago · 1 min read



JAN MUDDÉ LIVE

विद्योती के अध्यापक प्रमोद...

1 of 59 Next

विद्योती के अध्यापक... खोड़ी विधोदरू ना... रुड़की शहर में प्र...

विद्योती के अध्यापक... खोड़ी विधोदरू ना... रुड़की शहर में प्र...

रुड़की में B.T. एम... रुड़की के नए अधिका... भारतीय किसान प...

रुड़की में B.T. एम... रुड़की के नए अधिका... भारतीय किसान प...

अध्ययन वर्दीया न... भगवानदरू विरीक्या... रुड़की गंगान्दर की...

अध्ययन वर्दीया न... भगवानदरू विरीक्या... रुड़की गंगान्दर की...

1 of 59 Next

LIVE CRICKET SCORE

RECENT	LIVE	UPCOMING
ENG	VS	IND
387/10(112.2) & 192/10(62.1)		387/10(112.2) & 170/10(74.5)

England win by 22 runs



आरिफ़ निवाजी

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुशेर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दितचस्य प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीले निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33804>

उत्तराखंड

डेस्टिनेशन हिमाचल 2025



By Sahara Live News

© JUL 3, 2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दिलचस्प प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीले निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ईश्वर चंद्र संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9454>

From 2nd-4th July 2025, CSIR-CBRI Roorkee participated in "Destination Himachal 2025" in Dharamshala, showcasing innovative building technologies for disaster-prone, high-altitude regions. Its exhibits like prefab shelters and solar water heaters drew attention from dignitaries and visitors.

CSIR-CBRI in the Limelight | 28.06.2025

राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय खास खबर राजनीति लोकतन्त्र स्वास्थ्य राज्य शिक्षा एक्सक्लूसिव बॉलीवुड

UNCATEGORIZED

सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रुड़की में महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव पहुंची रूड़की, हुआ स्वागत



सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की में सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एम. Kalaiselvi तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के दौरे पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के साथ बरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. डी. पी. कनुगो, डॉ. पी. सी. पणशियाल, एस. के. सिंह, डॉ. घंटन स्वरूप मीणा, अशोष विप्लव, डॉ. हेमलता, डॉ. हीना गुप्ता, ashwathi और डॉ. सीमा चौरसिया उपस्थित रहे। आगंतुक विभिन्न अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरासत दीर्घा (Virasat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETF), डेडवुड फ्लो सुविधा, लिक्विफैब्रन प्रयोगशाला, उडी प्रिंटिंग लेब, अग्नि अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं ऑपन वेस फायर मिटिगेशन सुविधा प्रमुख रही।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेवी ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनों, 12000 फीट की ऊँचाई or uske uppar उपयोग योग्य solar water heater सौर तापीय प्रणाली, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी, उडी प्रिंटिंग तकनीक, और HARI Project के अंतर्गत लेह-लद्दाख जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना .

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-समृद्ध और नवाचार केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। उन्होंने और आयदा-नेधी भवन डिजाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रचारित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका लाभ सुदूरवर्ती और आपदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33794>

उत्तराखण्ड

हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR" ।



By Sahara Live News

© JUN 28, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में टीजी, सीएसआईआर और सचिव, टीएसआईआर, भारत सरकार एवं सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार का आगमन रुड़की, 28/06/2025.

सीएसआईआर - उद्योग विभाग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की में आज सीएसआईआर की महानिदेशक एवं टीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (बीमती) एन कलाईसेली तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्नान के दौर पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के साथ वैश्व वैज्ञानिक एस के नेगी, डॉ. अमय चौधरी, डॉ. डी. पी. कन्नू, डॉ. पी. सी. पण्डित, एस. के. सिंह, डॉ. वंदन सरस्वती, आशीष शिवाल, डॉ. हेमलता, डॉ. हीम गुप्ता, ashwathi और डॉ. तीना चौधरी उपस्थित रहे। अग्रगण्य विभिन्न अतिथियों ने संस्नान की अवसरानुसार अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरसात दीर्घा (Virasat Digha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETF), डीएसएल प्रयोगशाला, उड़ी प्रिंटिंग टेब, अग्रि अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं अंततः वेत फायर प्रिंटिंग सुविधा प्रमुख रही।

भ्रमण के पश्चात अव्यक्त कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्नान की उपस्थितियों और निकस यात्रा को सादर करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया, "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेली ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनों, 12000 फीट की ऊंचाई पर solar water heater और तापीय प्रणाली, अग्रि सूर्य अभियंत्रण, उड़ी प्रिंटिंग तकनीक, और HARU Project के अंतर्गत तेर-तड़ाख जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना चाहिए, "to touch the untouched, to reach the unreached"।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्नान के ऊर्जा-सम्पन्न और नवाचार-केन्द्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने Polar Mission Centers, Coastal Marine Spatial Planning, और आपदा-रोधी भवन डिजाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्नान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रवर्तित करने की आवश्यकता पर बत दिया ताकि उनका लाभ सतृप्तता और आपदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्नान निदेशक द्वारा अतिथियों को सृष्टि चिन्ह भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धनवाचक भाषण के साथ हुआ।

Ishwar chand reporter sahara tv

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9416>

On 28 June 2025, Dr. N. Kalaiselvi (DG, CSIR & Secretary, DSIR) and Dr. M. Ravichandran (Secretary, MoES) visited CSIR-CBRI, Roorkee. They reviewed CBRI's advanced facilities and praised its innovations in disaster-resilient housing, green technologies, and its role in achieving the CSIR@2047 vision, especially for remote and high-altitude areas.

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.06.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में 'कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर कार्यशाला का समापन



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित 'उत्तर-पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र की कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर केंद्रित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन शुक्रवार को ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, सीएसआईआर-सीबीआरआई परिसर में हुआ। यह कार्यशाला 23 जून से प्रारंभ हुई थी, जिसमें विभिन्न अभियंता, वास्तुविद, शोधकर्ता और तकनीकी पेशेवर शामिल हुए। इसमें ऐसे निर्माण तरीकों पर चर्चा की गई जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, किफायती और पर्यावरण के अनुकूल हों। प्रस्तुतियों और प्रायोगिक सत्रों के माध्यम से पारंपरिक हिमालयी तकनीकों को आधुनिक निर्माण विधियों के साथ जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया। समापन सत्र में कार्यशाला के प्रमुख बिंदुओं की संक्षिप्त समीक्षा की गई। वक्ताओं ने ऐसे निर्माण समाधान अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल हों और प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर सकें, विशेषकर ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में। इस अवसर पर सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूंगो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक शोध और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर निर्माण क्षेत्र की कई समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। उन्होंने बताया कि संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी तकनीकों के विकास के लिए कार्य करता रहेगा। इसके पूर्व प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों को डॉ.कानूंगो, डॉ.ताबिश आलम, आर्किटेक्ट अनुप कुमार प्रसाद, और डॉ.नवीन निशांत द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ.ताबिश आलम द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी वक्ताओं, आयोजकों और उपस्थितजनों का सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। यह कार्यशाला निर्माण तकनीकों की समझ और अनुभव साझा करने का अवसर बनी, जिससे क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान तैयार करने में सहयोग मिल सकता है।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33769>

CSIR-CBRI, Roorkee held a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost, eco-friendly construction for the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 23.06.2025

उत्तराखण्ड

उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों”



By Sahara Live News

© JUN 23, 2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, रुड़की द्वारा आयोजित “उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों” पर पांच दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 23 जून 2025 को शुरू हुआ और यह 27 जून 2025 तक जारी रहेगा, जिसमें विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को क्षेत्रीय रूप से टिकाऊ और लागत प्रभावी निर्माण विधियों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ लाया जाएगा। उद्घाटन सत्र की शुरुआत कार्यशाला के उद्देश्यों के विस्तृत अवलोकन के साथ हुई। अनूप कुमार प्रसाद ने पुष्प के साथ निदेशकों महोदय का स्वागत किया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक सुरेंद्र कुमार नेगी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, रुड़की ने कम लागत वाले समाधानों के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में निर्माण चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए उद्घाटन भाषण दिया।

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9387>

CSIR-CBRI, Roorkee organized a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost construction in the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 06.06.2025

उत्तराखंड

प्रधानमंत्री आवास योजना- ग्रामीण, उदय भारत की तस्वीर



By Sahara Live News

© JUN 6, 2025



सीबीआरआई रुड़की अपने कार्यों के लिए भारत के साथ-साथ विदेश में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं भारत सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों को धरातल पर उतरने के लिए रोजाना नए आयाम स्थापित और प्रयास करती रहती है प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण उदय भारत की एक साथ तस्वीर है सी बी आर आई विभिन्न क्षेत्रों में शोध करके कार्यों को जमीन से जुड़े हुए कार्यों को आम आदमी तक पहुंचाने के कार्य करती है यहां के वैज्ञानिक और रोजाना नए शोध कर करके भारत को एक नई पहचान देते हैं

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पीएमएवाई-जी, एमओआरडी के तहत क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में गोवा के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत ने मुख्य अतिथि के रूप में और मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री पेम्मासानी चंद्रशेखर ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया।

कार्यशाला में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने, नवीन समाधानों की खोज करने और पीएमएवाई-जी योजना के लिए आगे का रास्ता तय करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

कार्यशाला के दौरान ग्रामीण आवास महानिदेशक और रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पीएमएवाई-जी मिशन की सफलता में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अपार योगदान को स्वीकार किया और उसकी सराहना की। 2016 में कार्यक्रम की स्थापना के बाद से, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने निम्नलिखित में महत्वपूर्ण योगदान दिया है:

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9345>

CSIR-CBRI, Roorkee participated in World Environment Day by contributing to rural development under Unnat Bharat Abhiyan, showcasing its efforts toward sustainable village growth.

CSIR-CBRI in the Limelight | 05.06.2025

पर्यावरण संरक्षण हम सब की जिम्मेदारी, नरेंद्र पन्त डीएसपी



रुड़की सी बी आर आई परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पहुंचे

श्री नरेंद्र पंत , डीएसपी रुड़की और विश्व पर्यावरण दिवस के मुख्य अतिथि, डॉ डी पी कानूनगो जी, आज के कार्यवाहक निदेशक सीबीआरआई, डॉ आर के वर्मा, समिति के अध्यक्ष, सभी वरिष्ठ वक्ताओं और छात्रों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए व्याख्यान दिए

कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना और हरित भारत के संकल्प को साकार करना था। इस अवसर पर फलदार, छायादार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया, जिनमें पीपल, नीम, आम, बेल, अशोक और तुलसी प्रमुख रहे।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते प्रदूषण के बीच हमें प्रकृति के संरक्षण की ओर गंभीरता से ध्यान देना होगा। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से अपील की कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल भी करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण मिल सके।

उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि प्रकृति हमारी जिम्मेदारी है। वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन देने वाला प्रयास है।

कार्यक्रम का समापन देश के पर्यावरण की रक्षा हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए किया गया

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9334>

A tree plantation drive was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on World Environment Day to promote environmental awareness. Director Dr. Naresh Batra emphasized the importance of connecting with and protecting nature.

CSIR-CBRI in the Limelight | 15.05.2025

स्वच्छता सबका दायित्व 'प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक सी बी आर आई



By Sahara Live News

© MAY 15, 2025



"स्वच्छता सबका दायित्व" थीम के तहत भारत सरकार की प्दत स्वच्छता पखवाड़ा 2025 चल रहे उत्सव के हिस्से के रूप में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने अपने दो सप्ताह के स्वच्छता अभियान (1-15 मई, 2025) का समापन 15 मई, 2025 को आरएफटी ऑडिटोरियम में आयोजित एक समापन समारोह के साथ किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. तीना चौरसिया और डॉ. नीरज जैन ने किया। डॉ. तीना चौरसिया ने सम्मानित सभा का स्वागत किया और पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत किया, जिसमें वृक्षरोपण अभियान, सीएसआईआर-सीबीआरआई सदस्यों के लिए एक नारा प्रतियोगिता, सीएसआईआर-सीबीआरआई कर्मचारियों और बाबत विद्या मंदिर स्कूल के छात्रों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, बिजली के उपकरणों की सफाई और पूरे संस्थान में व्यापक सफाई अभियान आदि शामिल थे। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और सभी समन्वयकों, प्रतिभागियों और सहयोगी कर्मचारियों के समूहिक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने सतत विकास के महत्व पर जोर दिया, युवाओं को अपेक्षित प्रबंधन के लिए अतिमन्य समायोजन खोजने के लिए प्रोत्साहित किया और बाहरी सफाई के साथ-साथ मानसिक शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा, "स्वच्छता पूजा के बाद दूसरे स्थान पर है।"

डॉ. नीरज जैन ने चित्रकला प्रतियोगिता में उल्लेखनीय उत्साह और प्रतिभा के साथ प्रतिभागिताओं के विजेताओं और उपविजेताओं के नामों की घोषणा की। प्रशंसा और प्रेरणा के रूप में, प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने रत्नम और चित्रकला प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए, बच्चों और प्रतिभागियों के प्रयासों और रचनात्मकता की सराहना की।

एक विशेष सम्मान के रूप में, ए.आर. एस.के. नेगी, वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक ने संस्थान के सफाई कर्मचारियों को स्वच्छता बनाए रखने के उनके निरंतर प्रयासों के लिए प्रशंसा का प्रतीक देकर सम्मानित किया।

समारोह का समापन डॉ. एस. मैती द्वारा दिए गए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने निदेशक महोदय, बाबत विद्या मंदिर के शिक्षकों और छात्रों, आभोजन टीम और सीएसआईआर-सीबीआरआई में स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के सफल आभोजन में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Published in Sahara news :- <https://www.janmudde.com/archives/33392>

The valedictory ceremony of Swachhta Pakhwada 2025 was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on 15th May 2025. Director Prof. R. Pradeep Kumar distributed prizes to children and appreciated their active participation in promoting cleanliness.

The event also saw enthusiastic involvement from scientists, staff, and officials of the institute.

CSIR-CBRI in the Limelight | 13.05.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर की चर्चा

Jan Mudde · 3 days ago · 1 min read



आरिफ़ नियाज़ी।

रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं।

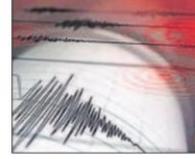
[Published in Jan Mudde E-newspaper](#)

आधुनिक उपकरणों का प्रयोग जरूरी

चर्चा

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में सीबीआरआई में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। खंडहर से लचीलापन सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी राय दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि भूकंप और भूस्खलन के जनहानि से बचने के लिए आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करना होगा। हेल्थ और एजुकेशन सेंटर को और मजबूत करना होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने की। इसके बाद पैनल चर्चा हुई। चर्चा का मुख्य निष्कर्ष यह



निकला कि स्थानीय इंजीनियरों, राजमिस्त्रियों और अधिकारियों के बीच क्षमता निर्माण को मजबूत करने की तत्काल आवश्यकता है। भूकंप सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम को संशोधित करना है। विशेषज्ञों ने कमजोर इमारतों, विशेष रूप से स्कूलों, अस्पतालों और विरासत संरचनाओं को फिर से तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। पैनल ने भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के जोखिमों को नियोजन में सम्मिलित करते हुए बहु-खतरों जोखिम

क्षेत्रीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भारतीय मानकों (आईएस कोड) को नियमित रूप से अपडेट करने और गैर-संरचनात्मक तत्वों जैसे कि इन्फिल्ट दीवारों और फिक्स्चर पर अधिक ध्यान देने का भी आह्वान किया। जीआईएस, ड्रोन और त्वरित ऑकलन जैसे आधुनिक उपकरणों के उपयोग को भविष्य की तैयारियों के लिए आवश्यक माना गया।

कार्यक्रम का संपन्न सीबीआरआई के वैज्ञानिक एसके नेगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया। इस दौरान आशीष पिप्लल, मिर्का दलवेहरा, डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, आशीष कपूर, समीर यादव, अमित कुश, प्रो. सीबी आर मूर्ति, प्रो. डी. श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेण गोस्वामी आदि शामिल रहे।

[Published in Hindustan Times](#)

खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 के नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक

सीएसआईआर-सीबीआरआई में हुई परीचर्चा

गोल्डन टाइम्स रुड़की (आरिफ़ नियाज़ी) रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं। दरअसल

2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने 13 मई, 2025 को "खंडहर से लचीलापन सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण

के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक" शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर



सीबीआरआई के निदेशक प्रदीप कुमार के अध्यक्षीय सम्बोधन से हुई, जिसके बाद डॉ. अजय चौरसिया ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तहत नेपाल में सीबीआरआई के योगदान पर प्रस्तुति

दी। इन प्रयासों को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष वृत्तचित्र फिल्म, "खंडहर से लचीलापन" भी जारी की गई। इस कार्यक्रम में भारत और नेपाल के प्रमुख विशेषज्ञ, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और नीति निर्माता पुनर्निर्माण प्रयासों पर विचार करने और सुरक्षित बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सबक साझा करने के लिए एक साथ आए। पैनल में प्रो. सी.वी. आर. मूर्ति, प्रो. डी. श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, श्री अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, श्री जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेण गोस्वामी, डॉ. अजय चौरसिया, श्री एसके नेगी और डॉ. डीपी कानुनगो जैसे प्रसिद्ध विशेषज्ञ शामिल थे। शेष पृष्ठ 2 पर.....

[Published in Golden Times E-newspaper](#)

❖ E-News Clips:-

उत्तराखंड

समाज पर तकनीकी का बड़ा प्रभाव, निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार सीबीआरआई

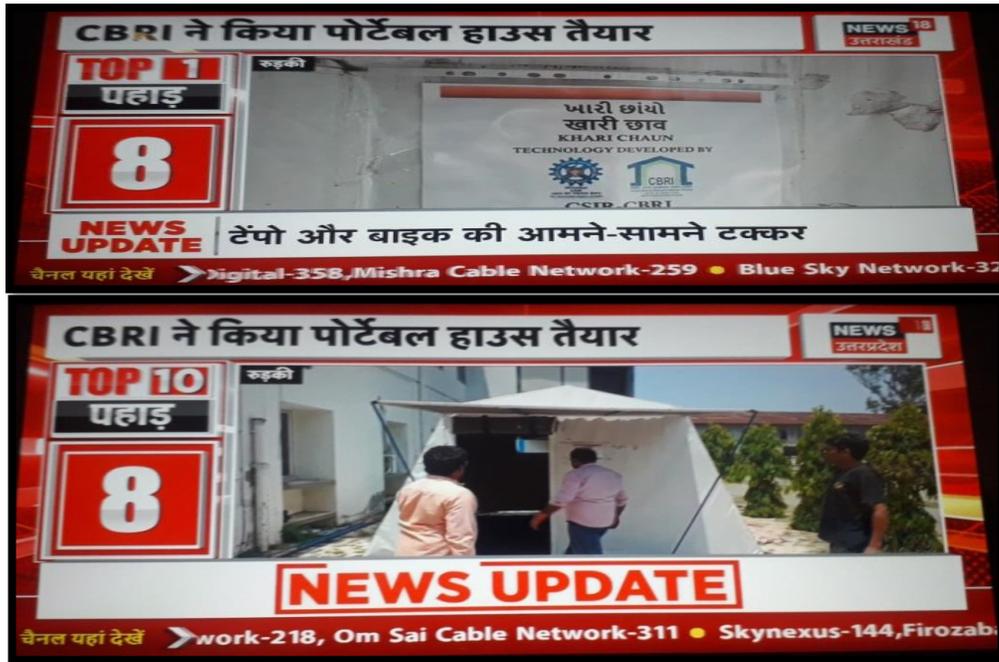
By Sahara Live News
© MAY 13, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025 का तकनीकी हस्तांतरण एवं नवाचार प्रदर्शनी के साथ किया उत्सव
रुड़की, 13 मई 2025

Published in E-Sahara News:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9252>

❖ Television News :-



[Telecasted in News Uttar Pradesh Channel](#)



[Telecasted in Nai Aawaz Channel](#)

Media Clips of a Technical Panel-discussion on “Lessons Learned from the 2015 Nepal Earthquake” held at CSIR-CBRI, Roorkee. Experts highlighted how post-earthquake reconstruction in Nepal guided the development of disaster-resilient building technologies. The event was chaired by Director Prof. R. Pradeep Kumar and included valuable insights from national and international scientists.

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदमःपंत

कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसे चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्टिसिल ऑफ साइटीफिक एंड इंटरिड्युसल रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनों केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसिंहाह कैरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर को ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। | हिन्दुस्तान



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर को ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदमःपंत

कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसे चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्टिसिल ऑफ साइटीफिक एंड इंटरिड्युसल रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनों केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसिंहाह कैरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।

• Television clips :-



Television telecast on News 18 Uttar Pradesh

